आखर हिंदी पत्रिका ; e-ISSN-2583-0597 खंड 4/अंक 1/मार्च 2024
Received: 12/03/2024; Accepted: 15/03/2024; Published: 24/03/2024

कुष्ठ रोग से प्रभावित व्यक्तियों और परिवार के सदस्यों के मानसिक स्वास्थ्य पर कुष्ठ रोग का प्रभाव-(एक मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन)

अखिलेश्वर कुमार साहू
शोधार्थी सामाजशास्त्र
शहीद महेन्द्र कर्मा विश्वविद्यालय
बस्तर जगदलपुर (छ.ग.)

अखिलेश्वर कुमार साहू, **कुष्ठ रोग से प्रभावित व्यक्तियों और परिवार के सदस्यों के मानसिक स्वास्थ्य पर कुष्ठ रोग का प्रभाव-(एक मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन)**, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 4/अंक 1/मार्च 2024,(46-53)

प्रस्तावना-

कुष्ठ रोग के हानि और कलंक से संबंधित दीर्घकालिक परिणाम होते है। इसमें मानसिक स्वास्थ्य पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। इस अध्ययन का उद्देश्य प्रभावित व्यक्तियों और उनके परिवार के सदस्यों पर कुष्ठ रोग के मानसिक स्वास्थ्य प्रभाव के संबंध में वर्तमान साक्ष्य को समेकित करना है। कुष्ठ रोग से व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा असर तनाव के रूप में परिलक्षित होता है। तनाव फलस्वरूप अनेक प्रकार के तीव्र संवेगों जैसे क्रोध, भय, चिन्ताए ग्लानि;ळनपसजद्ध एवं लज्जा सहित कई मानसिक रूग्णताओं की उत्पत्ति होती है। इसके अलावा अध्ययनों में पाया गया कि जन सांख्यिकीय कारक, जीवनशैली और रोग विशिष्ट कारक और कलंक तथा भेदभाव का मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा नकारात्मक प्रभाव डालते हैं। कुष्ठ रोग से प्रभावित व्यक्तियों के बच्चों में अवसादग्रस्तता के लक्षण और कम आत्मसम्मान की भावना पायी जाती है। अतः ऐसे हस्तक्षेपों की पहचान करनी है जो कुष्ठ रोगियों की मानसिक भलाई में सुधार कर सकते हैं। यह सुनिश्चित करने के लिए और अधिक शोध

आवश्यक है कि कुष्ठ रोग के लिए बीमारी के बोझ का निर्धारण करते समय मानसिक स्वास्थ्य प्रभाव को शामिल किया जाए और इस बोझ से राहत दी जाए।

शब्द कुंजीः चिंता, अवसाद, कुष्ठ रोग, कलंक, मानसिक स्वास्थ्य

कुष्ठ रोग एवं मानसिक तनाव -

कुष्ठ रोग एक संक्रामक रोग है जो हाथ, पैर और शरीर के आसपास त्वचा पर गंभीर विकृत घाव और तंत्रिका क्षति का कारण बनता है। कुष्ठ रोग प्राचीन काल से ही अस्तित्व में है। कुष्ठ रोग धीमी गति से बढ़ने वाले बैक्टीरिया के कारण होता है जिसे माइकोबैक्टीरियम लेप्राई कहा जाता हैं। हमारा शरीर एक जटिल संरचना है। ''यथा पिण्डे तथा ब्रहमाण्डे'' इस उक्ति से कहा गया है कि हमारे शरीर की एवं इस ब्रहमाण्ड की रचना समान है। जैसे विश्व की स्थिति एवं विनाश में चंद्र, सूर्य और वायु कारण है वैसे ही शरीर का निरोगी एवं रोगी होना दोषों की स्थिति पर आधारित है। दोष दो प्रकार के होते हैं- शारीरिक दोष और मानसिक दोष । जब तक दोष साम्यावस्था में रहते हैं तब तक शरीर स्वस्थ्य रहता है और जब इसमें विकृति आती है तब शरीर और मन में रोग होना प्रारंभ होता है। आज के समय में तनाव बहुत ही सामान्य बन चुका है। जो शारीरिक एवं मानसिक प्रतिक्रिया के रूप में देखा जा सकता है। मानसिक रोग इष्ट की अप्राप्ति तथा अनिष्ट के आगमन के कारण उत्पन्न होते हैं। हमारे आसपास हो रही ऐसी बहुत सी घटना या बातें जो हमारे मन के अनुकूल नहीं होती है वो सब तनाव को उत्पन्न करती है। मानसिक तनाव को चिंता, अवसाद, क्रोध ईर्ष्या, लज्जा, आत्मघाती विचार, नकारात्मक विचार, निराशा के रूप में देखा जा सकता है।

साहित्य का पुनरावलोकन-

संदर्भ साहित्य के अवलोकन से हमें शोध अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में मदद मिलती है। यहां कुछ अध्ययनों का उल्लेख विषय की गंभीरता को समझने के दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है-

बेन्सन और बैन डेन बोर्न ;1998द्ध ने कुष्ठ रोग होने के मानसिक स्वास्थ्य प्रभावों का वर्णन किया। उन्होंने पाया कि कुष्ठ रोग बायोमेडिकल और सामाजिक पाठ्यक्रम दोनों का पालन करता है। बायोमेडिकल पाठ्यक्रम में कुष्ठ रोग के कारण होने वाली क्षति भावनात्मक प्रतिक्रियाओं और

नकारात्मक व्यवहार को जन्म देती है। सामाजिक पाठ्यक्रम में विकलांगता, भावनात्मक प्रतिक्रियाओं व नकारात्मक व्यवहार को जन्म देती है।

लिट एट अल ;2012द्ध ने कुष्ठ रोग सहित एनटीडी और मानसिक स्वास्थ्य स्थितियों के बीच संबंधों की जांच की। उन्होंने पाया कि एनटीडी के परिणामों में कलंक, सामाजिक बहिष्कार, स्वास्थ्य सेवाओं की कमी शिक्षा व रोजगार के अवसरों की कमी, अधिकारों पर प्रतिबंध, बढ़ी हुई विकलांगता व प्रारंभिक मृत्यु दर शामिल है। इनके परिणाम स्वरूप उदासी, निराशा व सामाजिक अलगाव जैसी भावनाओं और व्यवहारों में वृद्धि के कारण खराब मानसिक स्वास्थ्य हो सकता है। खराब मानसिक स्वास्थ्य व एनटीडी के अन्य परिणाम चिंता व अवसाद जैसी मानसिक स्वास्थ्य स्थितियों के विकास में योगदान कर सकते है।

बाण्ड 1986 ने कुष्ठ रोग से उत्पन्न तनाव को अत्यधिक दुखद अनुभव तथा अतिन्यून उत्तेजना की ऐसी दशा के रूप में परिभाषित किया है, जो खराब स्वास्थ्य उत्पन्न करता है अथवा हमें खराब स्वास्थ्य की दिशा में ले जाता है।

सेम्रिटिरॉन्ग और वान ब्रैकेल 2014 के अनुसार इस अध्ययन का उद्देश्य मानसिक स्वास्थ्य एवं कुष्ठ रोग के संबंध में मौजूदा अध्ययनों की समीक्षा करना है ताकि उन तरीकों को चिन्हांकित किया जा सके जिनसे कुष्ठ रोग प्रभावित लोगों और उनके परिवार के सदस्यों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है।

जेफ्फरी 2005 ने मानसिक तनाव को द्वन्द, परिवर्तन, थकान एवं दबाव के प्रति होने वाली समग्र प्रतिक्रिया के रूप में परिभाषित किया है।

शोध का उद्देश्य-

1.कुष्ठ रोगियों की सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना ।

2. कुष्ठ रोगियों की प्रमुख मानसिक समस्याओं का अध्ययन करना ।

3. कुष्ठ रोगियों के विकास में बाधक कारकों का अध्ययन करना ।

4. कुष्ठ रोगियों के विकास में बाधक कारकों के लिए समाधान प्रस्तुत करना ।

5. प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर सुझाव प्रस्तुत करना।

न्यादर्श का चयन-

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए छत्तीसगढ़ राज्य के जांजगीर-चांपा जिले का चयन किया गया है। शोध में उद्देश्पूर्ण दैव निदर्शन द्वारा क्षेत्र का चयन किया गया है। इसके तहत जिले के छः विकासखंड के 300 कुष्ठ रोगी उत्तरदाताओं का चयन किया गया है।

शोध प्रविधि-

प्रस्तुत शोध पत्र के लिए सर्वेक्षण व अवलोकन शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है। उपकरण के रूप में उद्देश्य की पूर्ति हेतु साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से उत्तरदाताओं से प्राथमिक आंकड़ों का संकलन किया गया। वहीं विषय से संबंधित द्वितीयक आंकड़ों में मुख्य रूप से शोधपत्र, शोध ग्रंथ, वार्षिक रिपोर्ट, प्रतिवेदन, राष्ट्रीय जनगणना, सांख्यिकीय आदि को शामिल किया गया है।

प्रदत्त संकलन-

शोध कार्य के लिए चुने गए क्षेत्र में शोध कार्य के उत्तरदाताओं के लिए प्रश्नावली तैयार की गई प्रश्नावली में शोध के उद्देश्यों के अनुरूप प्रश्न तैयार किए गए। इसके साथ ही क्षेत्र में समूह चर्चा एवं अवलोकन के माध्यम से भी तथ्यों का संकलन किया गया।

प्रदत्त विश्लेषण का विवेचन-

तथ्य संकलन से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण एवं विवेचन इस प्रकार है-

आरेख क्रमांक-1

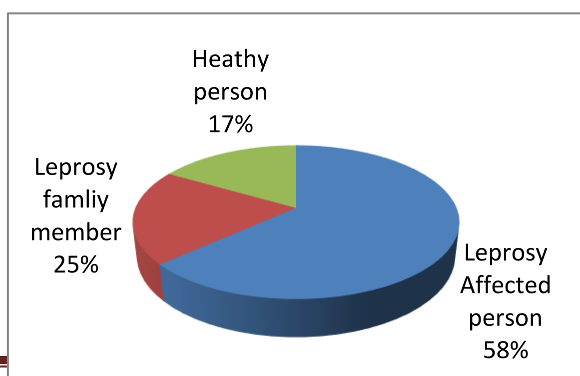

मानसिक रूग्णता

कुष्ठ रोग से प्रभावित व्यक्तियों में मानसिक रूग्णता एक महत्वपूर्ण कारक है। स्वस्थ्य व्यक्ति की तुलना में कुष्ठ रोग से प्रभावित व्यक्तियों में मानसिक रूग्णता का प्रसार काफी अधिक था। इस प्रकार मानसिक रूग्णता स्वस्थ व्यक्तियों में 17% कुष्ठ रोग से प्रभावित व्यक्तियों 58% में व कुष्ठ प्रभावित व्यक्तियों के सदस्यों में 25% पाया गया। इस प्रकार मानसिक रूग्णता एक प्रमुख मानसिक स्वास्थ्य समस्या के रूप मे परिलक्षित होती है।

आरेख क्रमांक-2

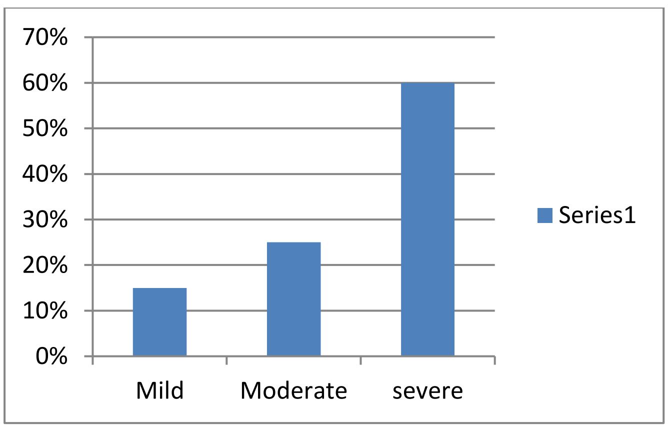

अवसादग्रस्तता

कुष्ठ रोगियों में सबसे अधिक पहचानी जाने वाली मानसिक स्वास्थ्य समस्या की स्थिति अवसाद है। इस प्रकार आरेख क्रमांक 2 में प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि उत्तरदाताओं में से 15% को हल्का अवसाद, 25% को मध्यम अवसाद और 60% को गंभीर अवसाद था।

आरेख क्रमांक-3

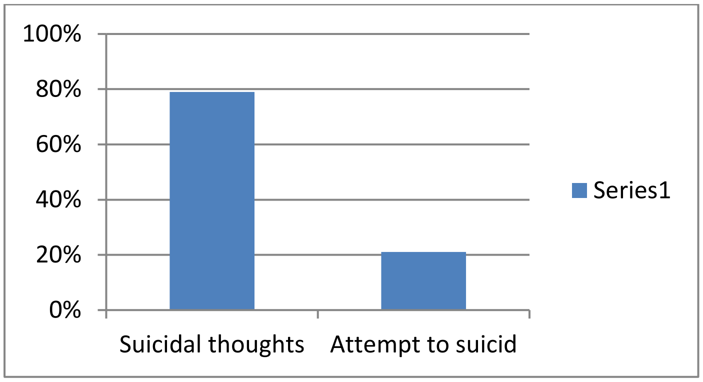

आत्मघाती विचार (आत्महत्या)

आरेख क्रमांक 1 में उत्तरदाताओं से प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात होता है। कि कुष्ठ रोग से प्रभावित व्यक्तियों में आत्महत्या, आत्महत्या के प्रयास और आत्मधाती विचार भी सामान्य है। अतः कुष्ठ रोगों व परिवार के सदस्यों में से 21% आत्मघाती विचारों से जूझ रहे थे व 79% ने आत्महत्या का प्रयास किया था।

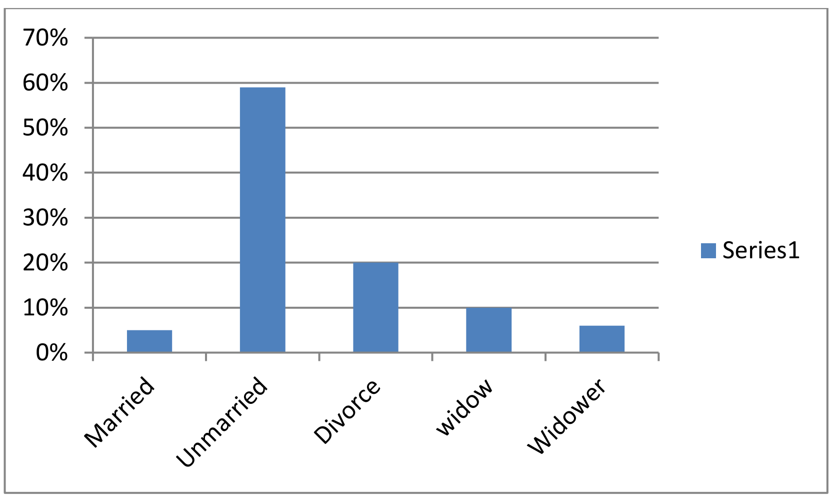

आरेख क्रमांक-4

वैवाहिक स्थिति

कुष्ठ रोगी की वैवाहिक स्थिति का भी मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ सकता है। एक अध्ययन के अनुसार अलग-अलग या तलाकशुदा कुष्ठ रोग से प्रभावित व्यक्तियों में एकल व्यक्तियों की तुलना में मानसिक परेशानी का जोखिम चार गुना अधिक होता है। व यह भी तर्क है कि जीवनसाथी न होने से मानसिक स्वास्थ्य पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

आरेख क्रमांक 4 के विश्लेषण से ज्ञात होता है, कि मानसिक स्वास्थ्य से प्रभावित उत्तरदाताओं में सबसे न्यूनतम विवाहित 5%, विधुर 6% तलाकशुदा 20% विधवा 10% एवं सबसे अधिकतम अविवाहित 59% उत्तरदाता ज्यादा प्रभावित होते हैं।

आरेख क्रमांक-5

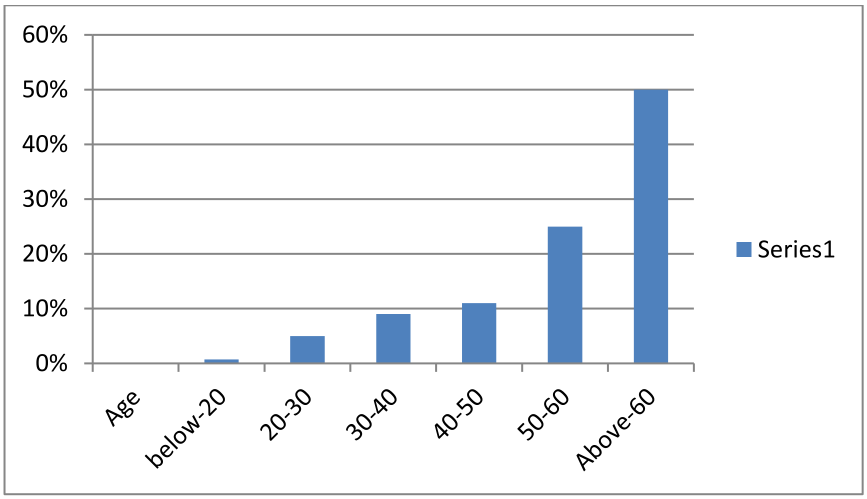

उम्र

अध्ययन में पाया गया कि अधिक उम्र मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित थी। आरेख क्रमांक 05 में उत्तरदाताओं से प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि 0.7प्रतिशत 20वर्ष से कम, 5 प्रतिशत 20-30वर्ष आयु, 9 प्रतिशत 30-40वर्ष आयु, 11 प्रतिशत 40-50वर्ष आयु, 25 प्रतिशत 50-60वर्ष आयु व अधिकतम 50 प्रतिशत 60 से अधिक वर्ष के थे। स्पष्ट है कम आयु वर्ग की तुलना में अधिक आयु वर्ग वाले रोगियों में मानसिक परेशानी अधिक थी।

आरेख क्रमांक-6

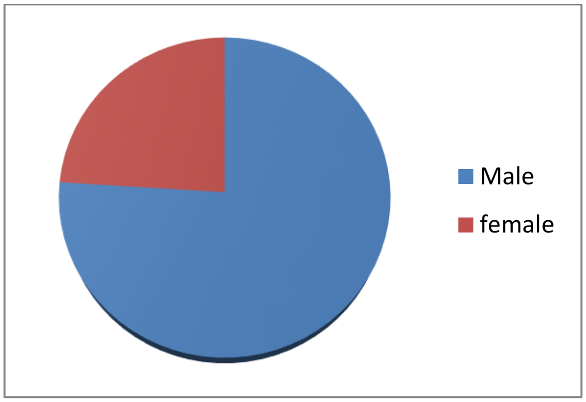

अध्ययन से पता चलता है कि लिंग मानसिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करता है। आरेख क्रमांक 06 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि पुरूष रोगियों की तुलना में कुष्ठ रोग से प्रभावित महिला व्यक्तियों में मानसिक सह रूग्णता का प्रसार काफी अधिक था। जिसमें उत्तरदाताओं में 76 प्रतिशत महिला व 24 प्रतिशत पुरूष रोगी वर्ग थे।

निष्कर्षः-

व्यवस्थित मनोविश्लेषमणात्मक अध्ययन के माध्यम से प्रभावित व्यक्तियों और उनके परिवार के सदस्यों पर कुष्ठ रोग के मानसिक स्वास्थ्य प्रभाव के साक्ष्य को समेकित करने वाला यह महत्वपूर्ण अध्ययन है। कुष्ठ रोगियों और उनके परिवार के सदस्यों के बीच कई मानसिक स्वास्थ्य विकारों और नकारात्मक भावनात्मक स्थितियों की पहचान की गई। अवसाद और चिंता स्वास्थ्य नियंत्रण वाले लोगों की तुलना में कुष्ठ रोग से प्रभावित व्यक्तियों में इसका प्रसार अधिक पाया गया है। कुष्ठ रोग के बोझ की पहचान करने, मानसिक स्वास्थ्य परिणामों और परिवार के सदस्यों के मानसिक स्वास्थ्य पर कुष्ठ रोग के प्रभाव को ध्यान में रखने के लिए और शोध आवश्यक है।

सुझावः-

1. कुष्ठ रोग से प्रभावित व्यक्तियों में मानसिक रूग्णता कम करने हेतु उन्हें उचित चिकित्सा सुविधा व शासन की योजनाओं के लाभ हेतु व्यापक प्रचार-प्रसार किये जाए।
2. अवसाद ग्रस्तता के नकारात्मक प्रभावों से ग्रस्त कुष्ठ रोगियों हेतु उचित मानसिक स्वास्थ्य परामर्श व मनोचिकित्सक सुविधा मुहैया कराने की नितांत आवश्यकता है।

3. कुष्ठ रोग से प्रभावित व्यक्ति व उसके परिवार के सदस्यों में आत्मघाती या आत्महत्या के विचार को दूर करने हेतु उचित शैक्षणिक व संस्थागत परामर्श का उचित प्रबंधन की व्यवस्था सुनिश्चित की जानी चाहिए।

4. कुष्ठ रोगियों की वैवाहिक स्थित, आयु वर्ग व लिंग के आधार पर होने वाले मानसिक स्वास्थ्यगत असमानता को खत्म करने हेतु व्यापक प्रचार-प्रसार जन जागरूकता एवं प्रशिक्षण की महती आवश्यकता है।

5. कुष्ठ रोगियों की मानसिक स्वास्थ्य समस्या के उचित निदान हेतु पुनर्वास नीति का समुचित लाभ प्रदान किया जाना चाहिए।

संदर्भ:-

1. प्रेमकुमार आर. एरोल एस, मौरी एम व सान्डर्सन पी. (2002) सामाजिक कलंकः कुष्ठ रोग के लिए एकीकृत और उर्ध्वाधर देखभाल दृष्टिकोण का एक तुलनात्मक गुणात्मक अध्ययन 186-196 ।

2. ए.एन. राय एवं मधु अस्थाना (2010) ''आधुनिक परामर्शन मनोविज्ञान'' पृ. 480 ।

3. एम सुलेमान एवं दिनेश कुमार (2010) ''मनोरोग विज्ञान'' पृ. 140 ।

4. बेन्सन के. ए. और वैन डेन बोर्न बी (1998) '' कुष्ठ रोग में कलंक के आयाम और प्रक्रिया'' पृ. 341-350 ।

5. लिट एट अल (2011) ''उपचारित कुष्ठ रोग के रोगियों में न्यूरोपैथिक दर्द और मनोविज्ञानिक रूग्णता'' पृ. 981

6- Behere P. (1981) Psychological reactions to leprosy. Leprosy India 266-72.

7. Govindasamy K, Darlong J. Burden of depression and anxiety among leprosy affected and associated factors- Across Sectional Study From India. PLOS Neglected Tropical Diseases. 2021, 15(1)

8. Verma K (1994) Psychiatric morbidity in displaced leprosy patients Indian journal of leprosy. P- 339-343.

9. बॉन्ड (1986) '' मानसिक तनाव: दुखद अनुभव अथवा अतिन्यून उत्तेजना अवस्था'' पृ. 479।

10. आरण्य, स्वामी हरिहरानंद (1980) पातंजलि योगदर्शन दिल्लीः मोतीलाल बनारसीदास।

11- Feltham, C. and Horton I (2000): Handbook of counselling and Psychotherapy- Lodon: Sage Publications ltd.

****